मोरंगे

मार्च–अप्रैल 2019

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 गलत फैसला

उड़ान

7 अच्छा मित्र / आँधी

8 मिर्ची / आया नाई

9 स्कूल की घंटी

10 चिड़िया का बच्चा

11 गरीब का कुत्ता

12 बादल और लड़की

13 हाथी और मोहन

ज्ञान विज्ञान

14 डूबा हुआ नींबू तैरने लगा

जोड़–तोड़

15 जोड़ना–तोड़ना

कलाकारी

18 कागज की मूर्ति

बात लै चीत ले

19 महाराजा अश्वपति और रामदास

मोना गुर्जर, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय, गोपालपुरा

21 **माथापच्ची**
हीहीही–ठीठीठी

22 **कुछ हमने बढ़ायी,**
कुछ तुम बढ़ाओ

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जगदीश प्रसाद सैनी
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – कालूराम मीना, उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली
वर्ष 9 अंक 105–106

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

रिंकु मीना,
उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरूआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरूआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरूआत की गई। ये तीनों उदय पा. ठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानव. रों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुंचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

खेल खिलाड़ी

गलत फैसला

दीपक मीना,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–रंगोली

बात उन दिनों की है, जब न तो खेलने के लिए दोस्त थे और ना ही फुटबॉल और फुटबॉल शूज। लेकिन 5 साल का सलीम अपने गुरूजी के साथ हमेशा खेलने के लिए स्कूल मैदान पर आ जाता। गुरूजी भी अपने काम से समय मिलते ही फुटबॉल खेलने लगते। सलीम खेलना नहीं जानता था। पर फुटबॉल के लिए गुरूजी के साथ भागता। उनका पीछा करता। धीरे–धीरे सलीम को खेल समझ में आने लगा।

स्कूल टाईम में भी वे खेल के समय में खेलते। धीरे–धीरे स्कूल के दूसरे बच्चे भी फुटबॉल में रूचि लेने लगे। अब गुरूजी ने उन्हें खेल को तरीके से खिलाना षुरू किया। धीरे–धीरे बच्चे तरीके से खेलने लगे। देखते ही देखते सभी बच्चे पूरे नियमों से खेलने लगे। सलीम उन सब में सबसे बेहतर खेलता था। उसकी दौड़ और ड्रिबलिंग अच्छी थी। उन सबकी एक समस्या थी। उनके पास मात्र एक ही फुटबॉल थी जो अक्सर पंचर हो जाती थी। आस–पास फुटबॉल ठीक करने वाला कोई नहीं था तो गुरूजी ही फुटबॉल को काटते, उसकी पंचर निकालते और फिर से सिलाई करके पहले जैसी बॉल तैयार कर देते थे।

बच्चे सवाल करते, ''गुरूजी, आपने इसे कैसे सिला, सिलाई तो कहीं नजर ही नहीं आ रही है?''

गुरूजी ने कहा, ''आपकी तरह बचपन में हमारे पास भी एक ही बॉल होती थी। बस खेलने का जोश इतना था कि हमने उसे नई बॉल की तरफ अन्दर से सीलना सीख लिया।''

ये बच्चे भी ऐसा ही करते। जब बॉल ज्यादा ही फट जाती तो दो फटी बॉलों से एक सही फुटबॉल तैयार करते और रोज खेलते। धीरे–धीरे एक अच्छी टीम तैयार हो रही थी। सलीम उस टीम का स्टार खिलाड़ी था।

स्कूल में या घर आते–जाते कभी कभार बच्चे आपस में झगड़ भी जाते। चेतन की सलीम से बिल्कुल नहीं बनती थी। उनके बीच अक्सर कहा सुनी होती। कभी–कभी तो बात इतनी बढ़ जाती की इनके माता–पिता भी उलझ जाते। बच्चों की रोज–रोज की नोंक–झोक से परेशान होकर सलीम के अब्बु ने उसे गुरूजी के स्कूल से निकाल लिया और शहर के स्कूल में भेज दिया।

अब सलीम कभी कभार ही मिलता। उसका खेलना छूट चुका था। अगले ही वर्ष स्कूल की फुटबॉल टीम ने जिला स्तरीय खेल आयोजन में भाग लिया। पहली बार खेलने पर भी टीम ने फाईनल में जगह बनाई। गुरूजी सलीम को बहुत याद कर रहे थे। अगर सलीम साथ होता तो उन्हे कोई चिन्ता नहीं होती। अन्तिम मुक. ाबले में टीम 4:0 के अन्तर से पिछड़ गई। टीम के प्रदर्षन से सभी खुष थे। 4 बच्चों का स्टेट टीम में भी चयन हुआ। पर गुरूजी अपने पहले स्टार को याद कर रहे थे।

आज स्कूल की टीम हर साल खेल कार्यक्रमों में भाग लेती है। पुरूस्कार भी जीतती है। स्कूल के बच्चे खेल अकादमियों से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर अपना जलवा दिखा रहे हैं। स्कूल पर भी अब फुटबॉल और जरूरी सामग्री और सुविधाओं की कोई कमी नहीं है। पर एक प्रतिभा थी जिसे गुरूजी अपनी मंजिल तक नहीं पहुँचा सके।

एक दिन गुरूजी से सलीम की मुलाकात होती हैं तो पता चलता है कि शहर की स्कूल में उसकी पढ़ाई भी ठीक नही चल रही। इसका नतीजा यह हुआ कि वह पढ़ाई में पिछड़ गया। कुछ समय बाद पिता की मृत्यु हो जाती है। शिक्षा के कमजोर स्तर और परिवार की जिम्मेदारी ने उसकी पढ़ाई छुड़वा दी। अब वह स्वयं रोजगार के रूप में स्वयं की पंचर बनाने की दुकान चलाता है।

गुरूजी को आज भी इस बात का अफसोस है कि, ''अगर मैं सलीम को उस दिन स्कूल छोड़ने से रोक पाता तो आज ना सिर्फ यह अपनी पढ़ाई पूरी करता बल्कि फुटबॉल में भी अपनी पहचान बनाता।''

गुरूजी ने कभी नहीं सोचा था कि फुटबॉल की पंचर से शुरू हुआ सफर मोटर साईकिल और ट्रेक्टर की पंचर पर खत्म होगा। माता–पिता के एक गलत फैसले ने बच्चे के जीवन की दिशा ही बदल दी।

विष्णु गोपाल

रौनक, उम्र–8 वर्ष, समूह–संगम

अच्छा मित्र

रामसिंह मेरा सबसे अच्छा मित्र है।
उसकी और मेरी आयु एक ही है।
वह रहता मेरे मकान के निकट है।
मेरी कक्षा में पढ़ता है।
कक्षा का मॉनीटर है।
हम साथ–साथ स्कूल जाते हैं।
शाम को खेलने भी साथ जाते हैं।
मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ।
वह भी मुझे बहुत प्यार करता है।
रात्रि में साथ–साथ अध्ययन करते हैं।
वह मुझसे भी ज्यादा मेहनत करता है।
उसका स्वभाव अच्छा है।
मेरी बहुत सहायता करता है।
वह कबड्डी का अच्छा खिलाड़ी है।
मैं उसके साथ हमेशा खुश रहता हूँ।

हिमांशु बैरवा, कक्षा–7,
राजकीय विद्यालय सवाईगंज

आँधी

आँधी आई आँधी आई
पेड़ों को हिलाती आई
किवाड़ों को बजाती आई
चारे को उड़ाती आई
आँधी आई आँधी आई।

नीरू, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

मीनाक्षी, उम्र–11 वर्ष, समूह–संगम

मिर्ची

मिर्ची आई मिर्ची आई
सबको रूलाती आई
सबको खिलाती आई
मिर्ची आई मिर्ची आई
सबको नाच नचाती आई
मिर्ची आई मिर्ची आई।

अशोक, उम्र–9 वर्ष,
समूह–सागर

सबीना सैनी, उम्र–11 वर्ष, समूह–रौशनी

आया नाई

देखो गाँव में आया नाई।
नाई ने ढोलक बजाई।
ढोलक सुनकर लुगायाँ आई।
छोरा–छोरी संग में लाई।
कोई बोले बेबी कट कर जो।
कोई बोले हनी कट कर जो।
सबने मनपसंद कटिंग करवाई।
देखो गाँव में आया नाई।

सपना राजावत, शिक्षिका,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

सोनिया गुर्जर, उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू

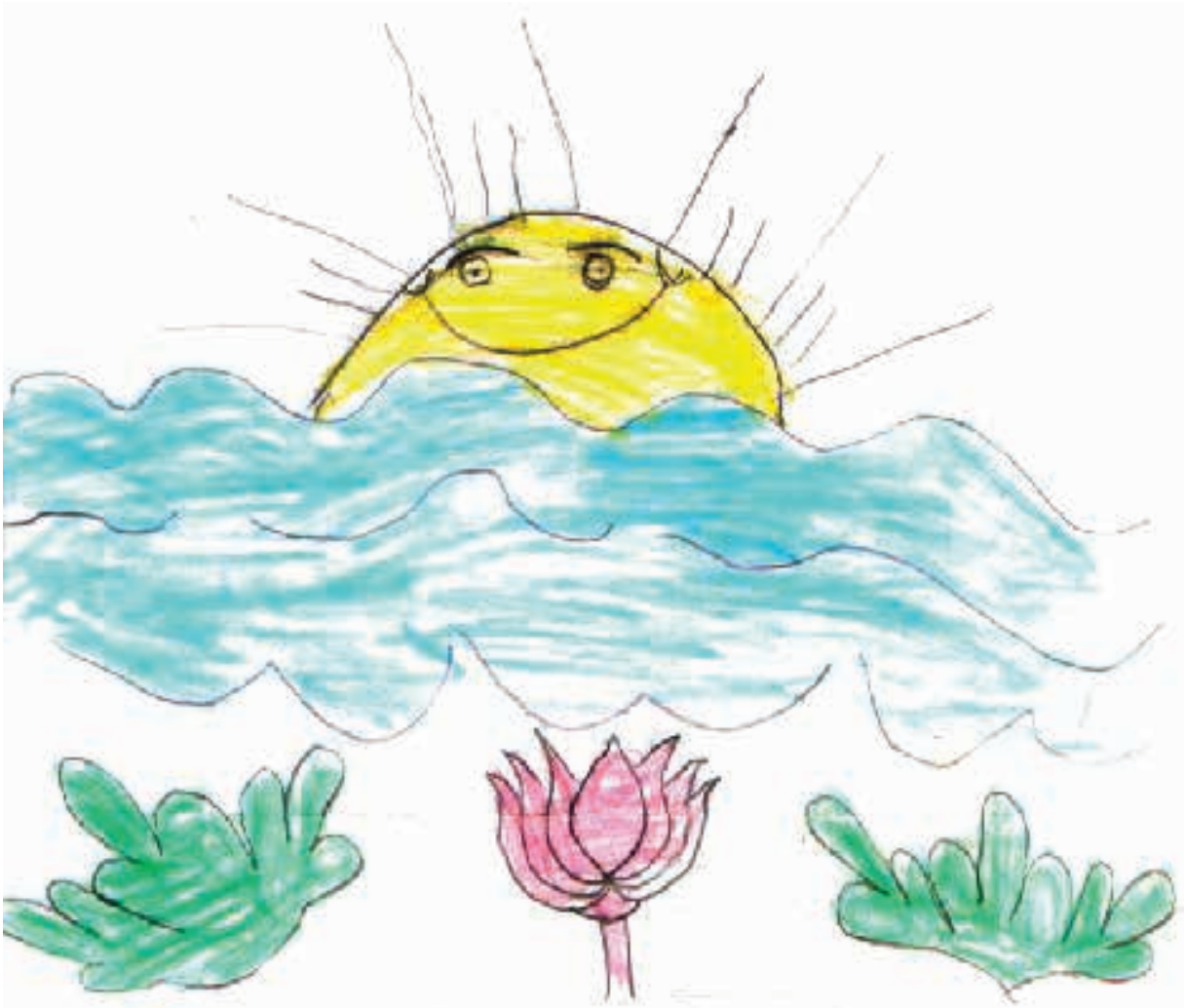

दिलबर जाट, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय मेईकलां

स्कूल की घंटी

स्कूल में बजी घंटी।
लेकर बस्ता पहुँचा बंटी।
स्कूल में जाकर देखा।
पढ़ रहे थे सब बच्चे।
फिर भी थे वो कच्चे–कच्चे।
बंटी तो था बहुत सच्चा।
बंटी का कार्य था अच्छा।

शिवानी प्रजापत,
उम्र–11 वर्ष, समूह–मुस्कान

चिड़िया का बच्चा

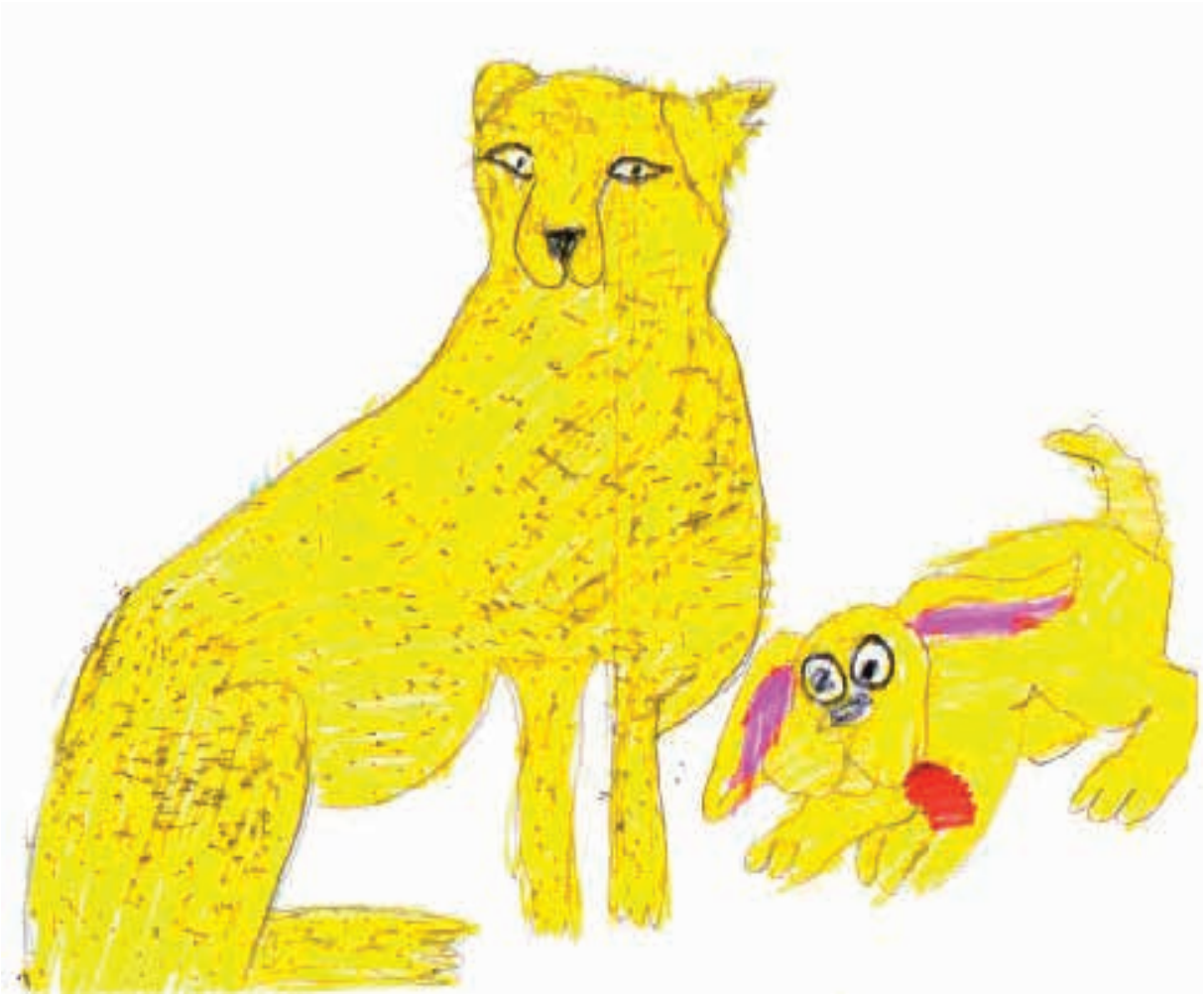

अर्चना चौधरी, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय अल्लापुर

एक बार एक जंगल में एक शेर रहता था। उस शेर का नाम बबलू था। बबलू जंगल का राजा था। एक दिन बबलू को प्यास लगी तो वह जंगल में पानी पीने के लिए तालाब पर गया। वहाँ उसे किसी के चीखने की आवाज सुनाई दी। बबलू ने देखा तो उसे एक चिड़िया का बच्चा दिखाई दिया जो झाड़ में फँस गया था। बबलू उसके पास गया और उसे झाड़ हटाकर बाहर निकाला। उससे उसके मम्मी–पापा के बारे में पूछा। थोड़ी ही देर में वहाँ उस बच्चे के मम्मी–पापा आ गये। वह बच्चा खेलते–खेलते उनसे बिछुड़ गया था और वे भी उसे ही ढूंढ रहे थे। शेर ने बच्चा उन्हें संभला दिया। बच्चा मम्मी पापा से मिलकर बहुत खुश हुआ। शेर तालाब से पानी पीकर वापस जंगल में चला गया।

महेन्द्र गुर्जर, समूह–सागर, उम्र–7 वर्ष

गरीब का कुत्ता

एक गाँव था। उस गाँव का नाम शैलेन्द्रपुर था। उस गाँव में एक किसान रहता था। वह दूसरों की मदद करता था। उसने एक कुत्ता पाल रखा था जो बहुत समझदार था। गाँव वाले उससे बहुत जलते थे। वे सोचते थे कि यह गरीब किसान है और इसका कुत्ता बहुत समझदार हैं, इनके सामने हमारी दाल नहीं गलती है। कुछ गाँव वालों ने मिलकर योजना बनाई कि इस किसान के कुत्ते को पकड़ कर ले जाकर दूर दूसरे गाँव में छोड़ आते हैं। फिर उन्होंने वैसा ही किया। जब किसान को पता चला कि उसका कुत्ता घर पर नहीं है तो उसने कुत्ते को पूरे गाँव में ढूंढा परन्तु उसे कुत्ता नहीं मिला। उसने सभी गाँव वालों से पूछा परन्तु गाँव वालों ने कुत्ते के बारे में उसे कुछ भी नहीं बताया। गाँव के एक आदमी ने कहा, ''मैंने कुछ दिन पहले सुना था, गाँव के कुछ लोग तुम्हारे कुत्ते को ले जाकर अलवर छोड़कर आने की बातें कर रहे थे।'' वह किसान तुरन्त अलवर गया तो वहाँ उसे उसका कुत्ता मिल गया। वह कुत्ते को लेकर वापस गाँव आ गया। उसने गाँव वालों से कहा कि आप सबने मिलकर मेरे साथ विश्वासघात किया है। जब कभी समय आयेगा और आप लोगों को मेरी सहायता कि आवश्यकता पड़ेगी तो मैं भी आपके साथ ऐसा ही करूंगा। गाँव के लोग डर गये और उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ तो गाँव वालों ने किसान से उन्हें माफ करने के लिए कहा और कहा कि अब आगे से ऐसा नहीं होगा। किसान ने उन्हें माफ कर दिया और वे साथ–साथ मिलकर रहने लगे।

रामधणी, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

बादल और लड़की

अंजली प्रजापत, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय मेईकला

एक बार एक जंगल था। उस जंगल में शेर घूम रहा था। तभी अचानक बादल नीचे आया और शेर को पकड़कर अपने साथ ले गया।

शेर बोला, ''मुझे माफ कर दो, मुझे छोड़ दो।'' बादल नहीं माना, उसने शेर को नहीं छोड़ा। तभी शेर को एक लड़की घूमती हुई दिखाई दी।

आसमान में शेर ने बादल से कहा, ''हे बादल ये जो लड़की है उसके पास जादुई शक्ति है वह तुम्हें पकड़कर बंद कर देगी।'' बादल को बहुत गुस्सा आया और उसने शेर को वापस छोड़ दिया। बादल लड़की को पकड़कर अपने साथ ले गया। इस तरह शेर ने बादल से अपनी जान बचाई। अब लड़की खतरे में थी। लड़की ने बादल से कहा, ''मुझे नीचे उतारो।'' परन्तु बादल तो जैसे किसी न किसी को उठाकर ले जाने के लिए ही आया था।

लड़की ने हवा से मदद मांगी, ''ऐ हवा, मेरी मदद कर।'' हवा ने लड़की की बात सुनी और बादल को समझाया। पर बादल तो विकराल रूप धारण करके उड़ रहा था। हवा ने भी अब बादल को धमकी दी, ''देखो बादल, अगर तुमने इस लड़की को नीचे नहीं उतारा तो मैं इतनी तेज हवा चलाऊंगी कि तुम तितर – बितर हो जाओंगे।''

हवा की बात सुनकर बादल डर गया और लड़की को उतार कर ऊपर उठ गया। लड़की सीधे षेर के पास गई और बोली, ''इतने ताकतवर जानवर होकर भी तुमने अपनी जान बचाने के लिए मेरी जान खतरे में डाल दी। तुम अच्छे नहीं हो। अब से तुम जंगल में अकेले ही घूमोगे और सब तुमसे दूर भागेंगे। जब तुम पर मुसीबत आयेगी तो कोई तुम्हारी मदद के लिए नहीं आयेगा।''

लड़की की बात सुनकर शेर ने माफी मांगी परन्तु लड़की तो अपनी बात कहकर चली गई और शेर पछताता रहा।

सलोनी यादव, उम्र–8 वर्ष

कोमल सैनी, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

हाथी और मोहन

एक गाँव में मोहन नाम का एक लड़का रहता था। वह एक दिन बाजार में गया। जब वह बाजार से वापस आ रहा था तो उसे एक सुन्दर हाथी दिखाई दिया। वह उसे अपना दोस्त बनाना चाहता था। मोहन के पास कुछ फल थे। मोहन ने एक योजना बनाई कि मैं इस हाथी को फल खिलाकर अपना दोस्त बना लेता हूँ।

मोहन हाथी से बोला, ''हाथी, तुम मेरे दोस्त बनोगे?''

हाथी मुस्कुराकर बोला, ''क्यों नहीं बनूंगा?'' मोहन बहुत खुश हुआ।

मोहन हाथी से बोला, ''मैं तुम्हें एक तोहफा देना चाहता हूँ।''

हाथी बोला, ''क्या दोगे मेरे दोस्त।'' मोहन ने अपने बेग में से फल निकाले। फलों को देखकर हाथी बहुत खुश हुआ।

हाथी बोला, ''हाँ, हाँ यह तो बहुत मीठे होंगे।''

मोहन बोला, ''हाँ दोस्त, ये फल मैं तुम्हें ही खिलाऊंगा।'' फिर मोहन ने उसे फल खिलाए और वे दोनों अपने–अपने घर चले गये।

लोकेश बैरवा, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय सवाईगंज

डूबा हुआ नींबू तैरने लगा

कक्षा में मेरे द्वारा बच्चों के साथ पर्यावरण अध्ययन शिक्षण कार्य के समय पानी में तैरने वाली व डूबने वाली वस्तुओं के वर्गीकरण की गतिविधि करवाई जा रही थी। पानी में डूबने व तैरने वाली वस्तुओं को पानी में डालकर देखा जा रहा था। श्यामपट्ट पर डूबने व तैरने वाली वस्तुओं को दो ग्रुपों में लिखा जा रहा था। बच्चे बारी–बारी से इस कार्य को रूचि से कर रहे थे। कुछ बच्चे आस–पास से भी कई चीजें लाकर पानी में डाल रहे थे, जैसे–पत्थर, पत्ती, फूल, लकड़ी का टुकड़ा, नींबू, अमरूद आदि।

मनीषा, उम्र–11 वर्ष, समूह–तिरंगा

पानी में पैन को कैप सहित डूबोकर देखा तो डूबा नहीं मगर पैन को कैप व रिफिल निकालकर डूबोया तो वह डूब गया। यह देखकर बच्चों ने मुझसे कई प्रश्न किये। मैंने भी बच्चों से पूछा कि आप बताओ ऐसा क्यों हुआ? इसका उत्तर बच्चों ने अपने–अपने अनुभव के आधार पर दिया। कई बच्चों ने बताया कि पैन का ढक्कन हटाने के बाद पैन में पानी भर गया और वह डूब गया।

नींबू भी पानी में डूब जाता है। मगर जब डूबे हुए नींबू में नमक डाला तो नींबू तैरने लगा। यह बच्चों को एक जादू जैसा लगा और बच्चे पास के घर से नमक लाकर, नींबुओं में नमक लगाकर नींबू को पानी में तैराने की गतिविधि करने लगे। बच्चे इस प्रयोग को बड़े उत्साह से कर रहे थे और इसे जादू का नाम देने लगे। कुछ बच्चे नींबू को पानी में डूबोकर उसमें बार–बार नमक डालते और दिखाते कि मैंने जादू से नींबू को तैरा दिया। कुछ बच्चे तो दूसरे दिन भी नमक व नींबू लेकर आये और बार–बार इसी प्रयोग को अन्य बच्चों को दिखाने लगे।

मैंने बच्चों को बताया कि जब पानी में नमक डाला जाता है तो पानी का घनत्व बढ़ जाता है। अब पानी का घनत्व नींबू की तुलना में बढ़ गया है इसलिए नमक डालने पर नीबू तैरने लगा। क्योंकि पानी के घनत्व से जिस वस्तु का घनत्व कम होता है वह वस्तु पानी में तैरती है।

जगदीश प्रसाद सैनी, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

जोड़ना-तोड़ना

आज स्कूल अवलोकन के दौरान खाली कक्षा में काम करते बच्चों से बात करने का अवसर मिला। मैंने देखा कि सभी बच्चे तल्लीनता से अपना–अपना काम कर रहे थे। अधिकांश बच्चे तीन अंको की संख्या में गुणा कर रहे थे तो कुछ समस्यात्मक जोड़ घटाव अपनी–अपनी कॉपी में कर रहे थे। बच्चों ने मुझे कक्षा में देखकर कुछ पढ़ाने का आग्रह किया। कुछ समय सोचने के बाद मैंने उनसे कहा, ''पढ़ाई तो आप कर ही रहे हो। बस मुझे तो आपसे जोड़ पर कुछ बातें करनी है। अगर आप तैयार हैं तो बात करें?'' सभी ने सहमति दी और हमारी बात–चीत शुरू हो गई।

मैंने सभी को अपनी कॉपी किताब बंद करके बातचीत पर ध्यान देने के लिए कहा। मैंने उनसे ब्लेक बोर्ड पर लिखने के लिए तीन संख्या बताने के लिए कहा।

उन्होंने बताया, ''504, 99 और 9'' मैंने उनसे कहा अब आप बिना किसी कॉपी पेन की मदद लिए इस तीनों संख्याओं को जोड़ कर बताओ। मैंने आपस में भी एक दूसरे से बात करने के लिए मना कर दिया। कुछ देर बाद बच्चों के जवाब आने लगे। अधिकांश ने अपना उत्तर 612 बताया।

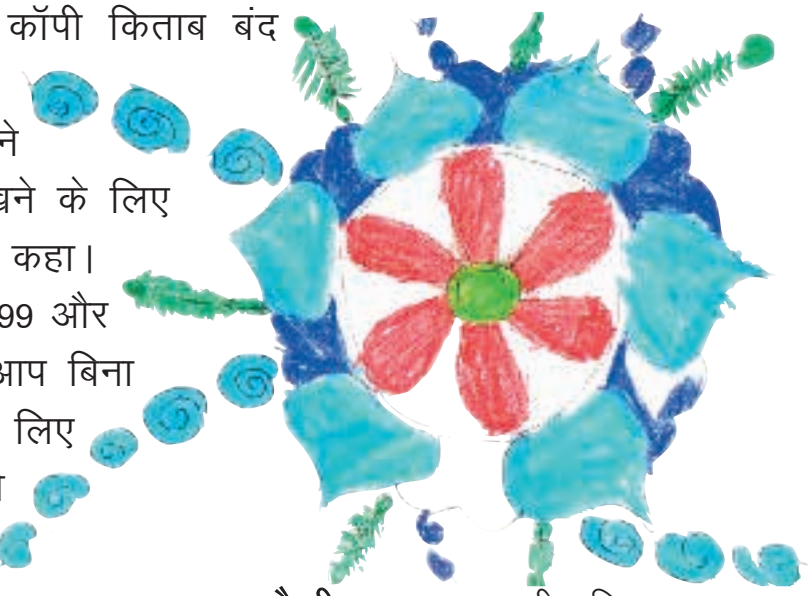

पूनम चौधरी, कक्षा–3, राजकीय विद्यालय, अल्लापुर

मैंने उनसे पूछा, ''मुझे बताओ आपने ये कैसे किया? तो उन्होंने बताया, ''सर जोड़ने के लिए सबसे पहले 500 को लिया। फिर 9 में से एक लेकर 99 में मिलाया और उसको 100 बनाकर 500 में जोड़ा तो 600 हो गये। बचे हुए 8 और 4 को जोड़ा तो 12 हो गये। फिर 12 को 600 में मिलाया तो 612 उत्तर आये। सबसे अधिक बच्चों ने जोड़ इसी प्रकार किए।

$= 500 + (99 + 1) + (8 + 4)$

$= 500 + 100 + 12$

$= 600 + 12$

$= 612$

दूसरा तरीके में एक बच्चे ने 100 बनाने के लिए 4 में से एक लिया और शेष 3 और 9 को जोड़ा जो पहले तरीके से लगभग मिलता जुलता ही है।

$= 500 + (99 + 1) + (9 + 3)$

$= 500 + 100 + 12$

$= 600 + 12$

$= 612$

जब इन बच्चों से पूछा गया कि, ''यह तरीका आपने कैसे जाना?''

उनका कहना था, ''ये हमने अपने मन से सोचा है।''

मैनें फिर पूछा, ''क्या किसी ने सिखाया था कक्षा में?''

सबने एक ही जवाब दिया, ''नही।''

तीसरे तरीके में 2 बच्चों ने इकाई से इकाई को जोड़ते हुए शेषफल जाना और फिर हांसिल लगाकर दहांई जोड़ी। अंत में दहांई से मिली हांसिल को सैंकड़े के साथ जोड़ते हुए अपना सही उत्तर तलाशने की कोशिश की। इनके द्वारा कॉपी का उपयोग नहीं करने पर भी उसी तरीके का इस्तेमाल किया जो उन्हें कक्षा में सिखाया गया था।

नेहा सोनवाल, उम्र–10 वर्ष, समूह–संगम

$$\begin{array}{r} 504 \\ +\ 99 \\ +\ 9 \\ \hline 612 \\ \hline \end{array}$$

चौथे तरीके में वे सब बच्चे थे जिन्होने गिनती का स्तेमाल करके जोड़ करने का प्रयास किया। मेरा मतलब उन्होने 504 से आगे गिनती बोलते हुए 99 को जोड़ने का प्रयास किया और जो आया उसमें 9 जोड़ते हुए गिनती को आगे बढ़ाया। इस लंबी प्रक्रिया में गलती होने की संभावना अधिक थी। इसलिए इनके बताये उत्तर सही नहीं थे।

कुछ बच्चे ऐसे भी थे जिनहोने तीनों संख्याओं के अंको को गिनकर मिला दिया। कुछ इस प्रकार – 5 + 0 + 4 + 9 + 9 + 9 = 36

यहाँ जोड़ने के निम्न तरीके बच्चों के काम में नजर आ रहे हैं –

1. क्रम से गिनते हुए एक एक जोड़ते जाना।

2. एक अंक का एक अंक से जोड़ करना। जो 1 से 9 तक में प्रयोग किया जाता हैं।

3. इकाई से इकाई, दहांई से दहाई सैंकड़े से सैंकड़ा जोड़ना और समूह बनाते जाना।

4. सैंकड़े से सैंकड़ा, दहांई से दहाई, इकाई से इकाई जोड़ना और समूह बनाते जाना।

प्रथम समूह के बच्चों को छोड़ दिया जाये तो बच्चों ने वही सब किया जो अब तक के गणित शिक्षण के दौरान उन्होने किसी न किसी चरण में जोड़ने के लिए सीखा था। जो अब बढ़ी होती संख्याओं के जोड़ करने में कारगर साबित नहीं हो पा रहा था। मौखिक जोड़ के दौरान जिन बच्चों ने बायें से दायें (सैंकड़े की तरफ से इकाई की ओर) जोड़ते हुए समूह बनाने का प्रयास किया उनका काम आसान रहा और उन्होने कम समय में बिना गलती के हल कर लिया था। जबकी दायें से बायें जोड़ने (इकाई से सैंकड़े की तरफ) वाले बच्चों को समूह बनाने जोड़ने और याद रखने में परेशानी आ रही थी। यदि हम स्थानीय मान को समझते हुए दोनों तरफ से जोड़ने और घटाने का अभ्यास करें तो बच्चों को समूह बनाने व तोड़ने की सही समझ बन पायेगी। जिसका उपयोग वे आने वाली समस्याओं के हल करने में अधिक कुशलता और समझ के साथ कर पायेंगे। शिक्षण में हांसिल जैसे शब्द का प्रयोग नहीं करके बड़ी/छोटी संख्या का समूह बनाने के लिए जोड़ने और तोड़ने का उपयोग करते हुए फिर से समूह बनाने की प्रक्रिया को समझने में बच्चों की मदद करनी चाहिए।

विष्णु गोपाल

ममता महावर, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय, मेईकलां

कागज की मूर्ति

कागज से तरह–तरह की आकृतियाँ, खिलौने, सजावट के लिए झालर, झंडियाँ आदि तो तुमने खूब बनाई होंगी, पर कभी मूर्ति बनाई है कागज से?

सबसे पहले यह तय करो कि तुम क्या बनाना चाहते हो। क्योंकि जो भी बनानना चाहोगे उसके सांचे की जरूरत पड़ेगी। पुराने अखबार, रद्दी, अनुपयोगी कॉपी–किताबों को टुकड़े–टुकड़े करके पानी में भिगो दो।

जब कागज अच्छी तरह भीग जाए तो एक–एक टुकड़ा लेकर सांचे पर चिपक. ाते जाओ। जब पूरे सांचे पर एक तह जम जाए तो उसके ऊपर पांच–छः तय गोंद की मदद से चिपकाकर बनाओ। अब इसे सूखने के लिए रख दो। सूख जाने पर सावधानी से धीरे–धीरे सांचे पर कागज से बनी रचना को अलग करो। तुम्हारी मूर्ति तैयार है।

लक्ष्मी गौड़,
उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

यह वजन में हल्की भी होगी और गिरने पर टूटने का डर भी नहीं रहेगा। इसमें तुम चाहो तो रंग भी सकते हो। इस विधि से तुम मुखौटे भी बना सकते हो। और हाँ, मुखौटे के लिए तो सांचे की भी आवष्यकता नहीं। बस अपने चेहरे के नाप का तसला या बड़ा कटोरा; या अन्य कोई बरतन चाहिए। इस पर ऊपर बताए तरीके से ही गीले कागज की पाँच–छः तह चिपकाओ और सूखने के लिए छोड़ दो। जब अच्छी तरह सूख जाए तो इसे मुँह पर लगाकर अनुमान से आँख और नाक के निषान बना लो। आँखों की जगह दो छेद बनाओ। नाक की जगह पर भी छेद बना सकते हो, ताकि तुम्हारी नाक बाहर निकल आए। चाहो तो मुखौटे में कागज की नाक भी बना सकते हो। जब कागज की तीन–चार तह बन जाए तो एक सूखे कागज को हाथ से दबाकर, मुटठी में भींचकर गोला सा बना लो। इस गोले को दबाकर ऊपर से संकरा और नीचे से थोड़ा नाक जैसा आकार दे दो। अब इसे गोंद लगाकर मुखौटे पर नाक की जगह चिपका दो।

मुखौटे पर रंग करके उसे सुंदर बना सकते हो। रंग की मदद से ही आंख की भौंहें, मुँह, मूंछ आदि भी बना लो। भूरे बाल, जूट आदि लगाकर भी दाढ़ी, मूंछ या भौंहें बनाई जा सकती है!

स्रोत– विष्णु गोपाल

बात लै चीत ले

महाराजा अश्वपति और रामदास

चायना सैनी, कक्षा–4, राजकीय विद्यालय, अल्लापुर

एक राजा था जिसका नाम महाराजा अश्वपति था। वह दानवीर, महाप्रतापी, प्रजापालक और दयालु था। वह हमेशा प्रजा के हित में ही सोचता था। वह बहुत धनवान राजा था। एक बार राजा अपने सिपाहियों के साथ जंगल में शिकार खेलने गया। शिकार करते–करते राजा बहुत दूर आ गया था। वह अपने साथियों से बिछुड गया और जंगल में इधर–उधर भटकने लगा। जंगल में भटकते–भटकते उसे प्यास लगी। कुछ दूर आगे जाकर उसे एक झौपड़ी दिखाई दी। उसकी उम्मीद की किरण जाग उठी। उसने झौपड़ी के पास पहुँच कर आवाज लगाई, ''कोई है क्या भाई, थोड़ा पानी मिलेगा, मुझे बहुत प्यास लगी है।'' झौपड़ी में से एक नवयुवक बाहर आया।

राजा ने पूछा, ''तुम कौन हो भाई, मुझे बहुत तेज प्यास लगी है, थोड़ा पानी मिल जाता तो मेरी प्यास बुझ जाती।''

उस नवयुवक ने कहा, ''मेरा नाम रामदास है, आप यहाँ बैठिये, मैं आपके लिए जल लेकर आता हूँ।'' फिर उसने राजा को पानी पिलाया। राजा ने रामदास से

नगर की ओर जाने वाले रास्ते के बारे में पूछा तो रामदास ने नगर की ओर जाने वाले मार्ग के बारे में बताया। राजा ने रामदास से कहा कि तुम हमारे नगर में आना हम तुम्हें सम्मानित करना चाहते हैं।

रामदास ने कहा, ''महाराज मुझे तो आपके सैनिक महल के मुख्य द्वार पर ही रोक लेंगे, मैं आपके महल में कैसे आ पाऊंगा?'' राजा उस रामदास को एक अंगूठी देता है और कहता है कि तुम द्वारपालों को यह अंगूठी दिखा देना फिर तुम्हें कोई नहीं रोकेगा। यह कहकर राजा वहाँ से चला गया। कुछ दिनों बाद जब रामदास राजा के दरबार में आता है तो राजा उसकी खूब खातिरदारी करता है। रामदास को सभा में सम्मानित भी करता है। रामदास अपनी बुद्धि और चातुर्य के कारण दरबार का नवरत्न बन गये। उन्होंने अपनी बुद्धि से कई आपदाओं से छुटकारा पाया।

एक बार राजा ने सोचा कि क्यों न इसकी परीक्षा ली जाये। तो राजा बीमार होने का नाटक करता है। वह अपने दरबारियों से कहा है, ''मुझे शेरनी का दूध लाकर पिलाया जाये, तो ही मैं ठीक हो सकूंगा। आप में से कोई मेरे लिए शेरनी का दूध ले आये।'' कुछ दरबारियों ने मना कर दिया और कुछ तो सुनते ही घबरा गये। भला कौन मौत के मुँह में जाना चाहता है। फिर रामदास ने कहा कि महाराज मैं आपके लिए शेरनी का दूध लेकर आऊँगा। मुझे सिर्फ एक दिन का समय दीजिए। वह नगर में जाता है। वहाँ उसे एक आदमी मिलता है, वह आदमी कहता है कि, ''मेरी बकरी का नाम शेरनी है।'' रामदास ने कहा, ''अच्छा ठीक है मुझे तुम्हारी बकरी का दूध चाहिए। मैं इसे मेरे महाराज के लिए ले जाना चाहता हूँ। जिससे हमारे महाराज ठीक हो सके।'' वह उस बकरी को लेकर आ जाता है और महाराज से कहता, ''महाराज यह लिजिए शेरनी का दूध।''

महाराज ने उससे कहा, ''मुझे पता था, तुम हमारे लिए शेरनी का दूध लेकर आओगे।'' महाराज दूध पीते ही ठीक हो जाते हैं। इतने में ही एक दरबारी वहाँ आता है और कहता है, ''महाराज यह दूध शेरनी का नहीं है, यह दूध तो बकरी का है।''

महाराज पूछते हैं, ''क्या यह सत्य है?''

रामदास कहता है, ''महाराज यह सत्य है। आपने हमसे कहा था शेरनी का दूघ लाओ। आपने यह नहीं कहा कि जंगल की शेरनी का दूघ लाना है। महाराज इस किसान की बकरी का नाम शेरनी है तो मुझे यह उपाय सुझा तो मैं आपके लिए दूध ले आया।'' महाराज बहुत खुश हुए। इस तरह उसने अपनी बुद्धि से सबका दिल जीत लिया।

अंकिता जाटव, उम्र–13 वर्ष, गाँव–मेईखुर्द

माथापच्ची

मीनाक्षी हरिजन, कक्षा–4 वर्ष,
राजकीय विद्यालय, मेईकलां

1. बेजुबान, फिर भी मैं बोलूँ, सारी दुनिया के दिल पर ढोलूँ, मैं लोगों का दिल बहलाता, अब बोलो मैं क्या कहलाता।

2. दो भाई हैं, एक ही रंग–रूप, दोनों में है पटती खूब। यदि एक गुम हो जाता तो दूसरा कोई काम न आता।

3. 100 रूपये को 7 पर्स में इस तरह बांटो की 1 से 100 तक कितने भी रूपये मांगे तो सीधा पर्स उठाकर दे दो।

रामकेश प्रजापत, समूह–हरियाली, उम्र–14 वर्ष

हीहीही ठीठीठी

पपीता गुर्जर, उम्र–12 वर्ष, समूह–तिरंगा

1. दो चींटियां एक डिब्बे पर रेंग रही थी। अचानक एक चींटी डिब्बे को जोर–जोर से काटने लगी। दूसरी ने पूछा, ''ऐसा क्यों कर रही हो?''

पहली चींटी ने कहा, '' पढ़ा नहीं तुमने, डिब्बे पर क्या लिखा है, 'यहाँ काटिए'''

2. परीक्षा हॉल में मास्टरजी – क्यों सौरभ प्रश्न मुश्किल लग रहा है?

सौरभ – प्रश्न तो ठीक है सर, मुश्किल केवल उसका उत्तर लग रहा है।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

एक बिल्ली थी। वह लड्डू खा रही थी। उधर से एक शेर आया। शेर ने कहा, "बिल्ली क्या खा रही हो?" बिल्ली ने कहा, "मुझे भूख लग रही है, इसलिए लड्डू खा रही हूँ।" शेर ने कहा, "मुझे भी लड्डू खाने के लिए दो".....

अभिषेक, *उम्र–5 वर्ष,*
समूह–फुलवारी द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।

चिड़ी हूँ चिड़ी हूँ
फर फर उड़ती हूँ

दीपा, *समूह–सागर,*
उम्र–7 वर्ष द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।

अमरसिंह मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–रंगोली

सन्तोष जाट, कक्षा–6,
राजकीय विद्यालय मेईकलां

अंजली,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–संगम

पहेलियों के ज़वाब –

1. रेडियो 2. जूते 3. तीसरे प्रश्न के जवाब की पुष्टी स्वयं या अपने शिक्षक से करें

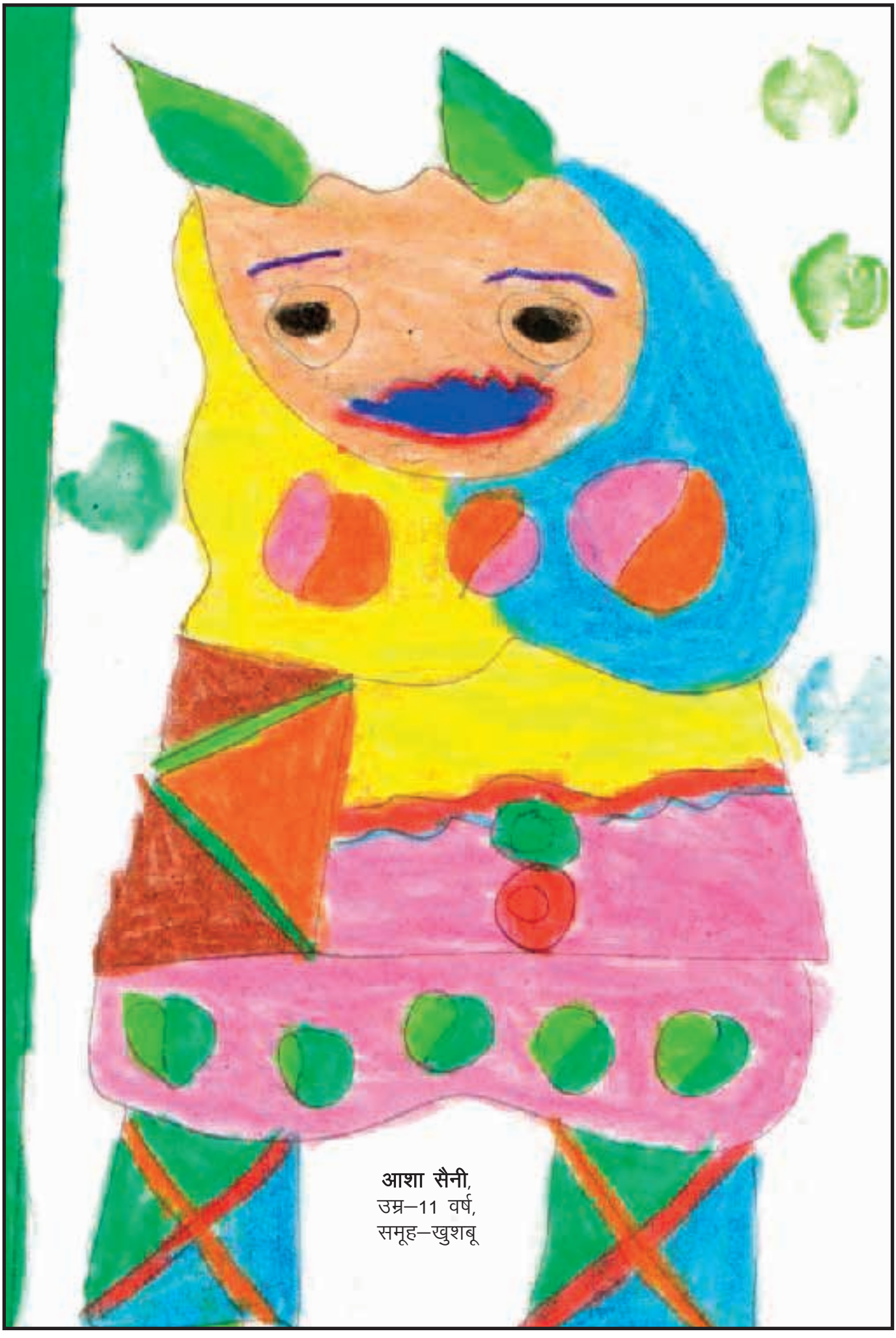

आशा सैनी,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–खुशबू